Date - 20-04-20

Dr. Sanehlata
Asst. Professor (Guest faculty)
Dept. of Philosophy
Women's college, Samastipur
Email Id. Snehababli 1987@gmail.com
Cont. no. - 8409587640

Class - B.A.(I) Hons

Topic - Introduction of Buddhism.

Scanned with CamScanner

बौद्ध दर्शन

सामान्य परिचय:- ई० पू० छठी शताब्दी में उत्तरी भारत में ब्राह्मण धर्म, ब्राह्मण आधिपत्य, वैदिक यज्ञ एवं जटिल सामाजिक व्यवस्था के विरुद्ध प्रतिक्रियास्वरूप दो धार्मिक एवं वैचारिक क्रान्तियाँ हुई। वास्तव में ये क्रान्तियाँ तत्कालीन धार्मिक एवं सामाजिक व्यवस्था के विरुद्ध सुधार आन्दोलन के रूप में अस्तित्व में आयी थी। इनमें से एक का नेतृत्व महावीर स्वामी ने किया था, यद्यपि उनके पूर्व भी उस क्रान्ति की एक व्यापक एवं दीर्घकालीन परम्परा मौजूद थी। दूसरी क्रांति का नेतृत्व गौतम बुद्ध ने किया जिनका प्रारम्भिक नाम सिद्धार्थ था। वे बाद में गौतम बुद्ध के नाम से विख्यात हुए और उनकी विचारधारा बौद्ध दर्शन कहलायी। उस महान व्यक्ति ने 29 वर्ष की अवस्था में मानवजाति को दुःखग्रस्त देखकर विशाल राजप्रासाद, राजसी वैभव, माता-पिता, पत्नी-पुत्र का परित्याग करके वन की ओर प्रस्थान किया। इसे बौद्ध दर्शन के इतिहास में 'महाभिनिष्क्रमण' कहा जाता है। संसार में व्याप्त दुःख, जीवन की क्षणभंगुरता एवं अनिश्चितता ने उनके अन्दर बचपन से ही प्रबल खलबली मचा दी थी। एक

Scanned with CamScanner

किंवदन्ती (प्रचलित कथा) के अनुसार उनकी वैराग्य - प्रवृत्ति को गति देने में चार घटनाओं का विशेष योगदान रहा जो कपिलवस्तु में उनके सम्मुख घटित हुई थीं। ये हैं - वृद्ध व्यक्ति का प्रत्यक्ष होना, बीमार व्यक्ति को सामने तड़पते हुए देखना, मृत व्यक्ति के पीछे रोते-बिलखते हुए लोगों का दीदार होना और भिक्षु साधु का साक्षात्कार। इन घटनाओं ने उनके भावुक मन में संसार के दुःखमय स्वरूप के प्रति उग्र पीड़ा उत्पन्न कर दी और वे 'दुःख-निवृत्ति' हेतु, सत्य के साक्षात्कार के लिए कृतसंकल्प हो गये।

उन्होंने सत्य का साक्षात्कार करने के बाद एकान्तवास नहीं किया, अपितु मानव जाति को दुःखों से मुक्ति दिलाने के लिए आजीवन प्रयास किया। गौतम बुद्ध की शिक्षाएं प्रधानतः व्यवहारिक हैं। उनके उपदेश का एकमात्र उद्देश्य मानवमात्र को दुःखों से मुक्ति दिलाना था। उन्होंने केवल संसार के दुःखमय स्वरूप और दुःखनिवृत्ति पर बल दिया। उन्होंने वेदों के प्रामाण्य को अस्वीकार किया, ईश्वर की सत्ता का निषेध किया, नित्य आत्मतत्व का भी खण्डन किया तथा सत्ता के विषय में परिवर्तन-शीलता के विचार का प्रतिपादन किया।

Scanned with CamScanner

इन सबके बावजूद उन्होंने वैदिक विचारधारा के कर्मवाद और पुनर्जन्म के सिद्धान्त में विश्वास किया। वास्तव में कर्मवाद का आदर्श भारतीय विचारधारा की स्वतवाहिनी धमनी है जिसमें विश्वास किये बिना स्वाचित्व की अपेक्षा नहीं की जा सकती।

गौतम बुद्ध ने स्वयं कोई दार्शनिक ग्रन्थ नहीं लिखा था। उनके विचारों की जानकारी उन महान ग्रन्थों से प्राप्त होती है जो उनकी मृत्यु के बाद उनके शिष्यों द्वारा संकलित हुए थे। बौद्ध धर्म एवं दर्शन की प्रारम्भिक जानकारी देने वाले तीन प्राचीन ग्रन्थ हैं, जिन्हें 'त्रिपटक' कहा जाता है। इनका अर्थ है, नैतिक नियमों की तीन पिटारियाँ। ये आकार में काफी विशाल हैं। ये हैं- सूत्र पिटक, विनय पिटक और अभिधम्म पिटक। ये पाली भाषा में लिखे गये हैं जो उन दिनों की लोकभाषा थी। सूत्र पिटक में बुद्ध के उपदेशों एवं वार्तालापों का विवेचन है। यह बुद्ध के उपदेशों का मूल संग्रह है। विनय पिटक में संघ के आचार - विचार के नियमों का संकलन है। अभिधम्म पिटक बुद्ध के उपदेशों पर आधारित दार्शनिक नियम का संग्रह है। 'मिलिन्दपन्हो' बौद्ध धर्म का दूसरा प्रामाणिक ग्रन्थ है जिससे बौद्ध दर्शन के प्रारम्भिक विचारों की जानकारी मिलती है। बुद्धघोष त्रिपिटक

Scanned with CamScanner

ग्रन्थों के बाद इसे बौद्ध धर्म का सर्वाधिक प्रामाणिक ग्रन्थ मानते हैं।

Scanned with CamScanner